INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 11 | DECEMBER – 2025

डॉ. सुरेन्द्र विक्रम के बाल गद्य साहित्य में हिन्दी बाल पत्रकारिता का अध्ययन

प्रभा त्रिपाठी
शोधार्थी हिन्दी
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

डॉ लता द्विवेदी
सेवानिवृत्त प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष हिन्दी
शासकीय विज्ञान महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

सारांश –

हिन्दी बाल पत्रकारिता, हिन्दी साहित्य की एक ऐसी विशिष्ट विधा है जिसने बालकों की अभिव्यक्ति, जानकारी और जागरूकता के क्षेत्र में एक नई दिशा प्रदान की है। पत्रकारिता जहाँ समाज का दर्पण मानी जाती है, वहीं बाल पत्रकारिता बाल समाज की संवेदनाओं, विचारों और आकांक्षाओं की प्रतिनिधि के रूप में उभरकर सामने आई है। यह केवल सूचना का माध्यम नहीं, बल्कि बालक के बौद्धिक, नैतिक और रचनात्मक विकास का सशक्त उपकरण भी है। समकालीन युग में बालकों की जिज्ञासा, वैज्ञानिकदृष्टिकोण और समाज के प्रति उत्तरदायित्व की भावना को विकसित करने के लिए पत्रकारिता की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है। हिन्दी बाल पत्रकारिता ने बालकों के हितों, अधिकारों और समस्याओं को अभिव्यक्त करने के साथ–साथ उन्हें साहित्य, संस्कृति, विज्ञान, पर्यावरण, खेल–कूद और सामाजिक विषयों से जोड़ने का प्रयास किया है। इस माध्यम ने बालकों के लिए विचारोत्तेजक लेख, प्रेरणादायक कहानियाँ, संवाद, कविताएँ और समाचार प्रस्तुत कर उनकी सृजनशीलता को प्रोत्साहन दिया है।

मुख्य शब्द – हिन्दी, बाल पत्रकारिता, हिन्दी साहित्य, जागरूकता एवं समाज का दर्पण।

प्रस्तावना –

हिन्दी बाल पत्रकारिता का इतिहास इस तथ्य का साक्षी है कि स्वतंत्रता–पूर्व काल से लेकर आज तक अनेक पत्र–पत्रिकाएँ इस दिशा में निरंतर कार्यरत रही हैं। 'बालसखा', 'बालभारती', 'नंदन', 'पराग', 'चम्पक', 'बालहंस' जैसी पत्रिकाओं ने बालमन को शिक्षित, संस्कारित और प्रबुद्ध बनाने में उल्लेखनीय योगदान दिया है। इन पत्रिकाओं के माध्यम से बालकों में न केवल अध्ययन की रुचि जागृत हुई, बल्कि उनमें समाज के प्रति सजगता और संवेदनशीलता का भी विकास हुआ।

शोधपरक दृष्टि से देखा जाए तो हिन्दी बाल पत्रकारिता केवल बाल साहित्य की शाखा नहीं है, बल्कि यह बाल समाज के विचार, कल्पना और रचनात्मकता का जीवंत मंच है। यह अध्ययन हिन्दी बाल पत्रकारिता के विकास, स्वरूप, उद्देश्य, प्रमुख पत्र–पत्रिकाओं और उसके सामाजिक–सांस्कृतिक योगदान का विश्लेषणात्मक

अवलोकन प्रस्तुत करता है, जिससे यह समझा जा सके कि बाल पत्रकारिता किस प्रकार हिन्दी साहित्य की समकालीन प्रवृत्तियों और बाल शिक्षा के क्षेत्र में सेतु का कार्य कर रही है।

बाल–पत्रकारिता का तात्पर्य, निःसंदेह, उन पत्रिकाओं के प्रकाशन से है जिनके द्वारा बालसाहित्य प्रकाशित हुआ। सदियों से यह बालसाहित्य नाना–नानी, दादा–दादी और अन्य बड़े बूढ़ों के माध्यम से मौखिक रूप में बालकों तक पहुँचता था। आधुनिक बालशिक्षा ने जिस प्रकार पुरानी धारणाओं को तोड़ते हुए बालकों को नया और उन्मुक्त परिवेश प्रदान किया, उससे बालकों के लिए भी साहित्य–सृजन करने की परंपरा का लगातार विकास होता गया और बालसाहित्य, साहित्य के एक विशिष्ट अंग के रूप में स्थापित हुआ। इसकी स्थापना का श्रेय बाल–पत्रिकाओं को जाता है।

विश्लेषण –

हिंदी बाल–पत्रकारिता का प्रारंभ बीसवीं शताब्दी के आरंभ से माना जाता है। सन् 1940 के आस–पास हिंदी बाल–पत्रिकाओं में लगभग 30 मुद्रित और 16 हस्तलिखित पत्रिकाएँ बालसाहित्य का प्रचार–प्रसार कर रही थीं। तबसे आज तक की बाल–पत्रकारिता में अनेक परिवर्तन हुए हैं। डॉ. विक्रम ने अपनी इस पुस्तक में सन् 1990 तक के इन्हीं परिवर्तनों का लेखा–जोखा प्रस्तुत किया है। इस पुस्तक की समीक्षा करते हुए सूर्यकुमार पांडेय लिखते हैं–''शोधार्थियों के लिए यह दिशा–निर्देशक पुस्तक है। यह पुस्तक उन आलोचकों को मुंहतोड़ जवाब देती है, जो जानबूझकर बालसाहित्य की स्तरीयता के प्रति शंकालु हैं, जो अच्छी रचनाओं की कमियों का रोना रोते हैं और बालसाहित्य को दोयम दर्जे का लेखन मानते हैं। बाल पत्रकारिता जैसे अछूते विषय को अपने शोध का क्षेत्र बनाकर डॉ विक्रम ने प्रशंसनीय कार्य किया है। लगभग 150 बाल–पत्रिकाओं का गहराई से अध्ययन कर उनकी प्रवृत्तियों की जानकारी कराना श्रमसाध्य है। प्रत्येक बाल–पत्रिका के प्रकाशनवर्ष, प्रकाशन स्थान, मूल्य, प्रसार–संख्या, संपादक, स्तंभ, विषयवस्तु, लेखकों के नाम आदि की जानकारी कराने वाली इस पुस्तक के 192 पृष्ठों में एक समूची यात्रा कैद है। इस पुस्तक को पढ़ते हुए पाठक हिंदी बालसाहित्य की संपूर्ण परिक्रमा का पुण्य–लाभ करते हैं।''[1]

समीक्षक अशोक लव ने 'हिंदी बाल पत्रकारिता पर उपयोगी पुस्तक' नामक अपनी टिप्पणी में प्रस्तुत पुस्तक की समीक्षा करते हुए कहा है कि – ''डॉ. सुरेंद्र विक्रम ने हिंदी की बाल–पत्रकारिता और उसकी विकास यात्रा पर जिस गंभीरता से कार्य किया है, उससे आलोचना के क्षेत्र में परिवर्तन आने की संभावना दिखाई देती है। 'बालदर्पण' से लेकर 'नंदन', 'पराग', 'बालहंस', 'बालभारती', 'नन्हे सम्राट' और 'बालसाहित्य समीक्षा' आदि पत्रिकाओं के प्रकाशन के साथ–साथ इन पत्रिकाओं पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ देकर लेखक ने 100 वर्षों के इतिहास को प्रामाणिक रूप में प्रस्तुत किया है। बालसाहित्य पर अनेक शोध–प्रबंध मिल जाते हैं, पर बाल–पत्रिकाओं पर ऐसा कार्य संभवतया पहली बार हुआ है।''[2]

इस पुस्तक की समीक्षा करते हुए तो यहाँ तक कह दिया गया है कि – ''मैं डॉ. सुरेंद्र विक्रम के इस प्रयास को वर्तमान पीढ़ी के लेखकों व साहित्यकारों को प्रेरणास्रोत के रूप में मानने को तैयार हूँ। मैं उनके इस प्रयास को नमन करता हूँ, क्योंकि उन्होंने उपेक्षिता 'उर्मिला' की तरह सर्वाधिक उपेक्षित विषय को उजागर करने के लिए अपने को समर्पित कर दिया है। युवा, उत्साही और कर्मठ लेखक के इस प्रयास की न केवल प्रशंसा की जानी चाहिए, अपितु उन्हें सम्मानित कर प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। अच्छा हो कि इस पुस्तक का प्रकाशन व्यक्तिगत प्रकाशन की बजाय सरकारी प्रकाशन करे ताकि न्यूनतम मूल्य में पुस्तक सुलभ हो सके।''[3]

प्रस्तुत पुस्तक पर निरंकारदेव सेवक और डॉ. राष्ट्रबंधु ने अपनी सम्मतियाँ दी हैं। निरंकारदेव सेवक का कहना है कि – ''जहाँ तक मैं समझता हूँ–बाल–पत्रिकाओं के इतिहास–विकास पर जैसा शोधपरक कार्य डॉ. सुरेंद्र विक्रम ने किया है, वैसा हिंदी में किसी अन्य ने नहीं किया। बड़ों के लिए प्रकाशित पत्र–पत्रिकाओं पर इस प्रकार का कार्य करना अपेक्षाकृत सरल इसलिए कहा जा सकता है कि उन पर लिखा हुआ बहुत कुछ भाषा और साहित्य के इतिहास की पुस्तकों में मिल जाता है। बाल–पत्रिकाओं पर कुछ लिखना कठिन इसलिए है कि उनमें से ज्यादातर ऐसी हैं, जो कुछ ही समय तक निकलने के बाद बंद हो गईं। उनके विषय में जानकारी प्राप्त करना असंभव सा हो जाता है। बाल–पत्रिकाएँ क्रम से सँजोकर रखी हुई पुस्तकालयों में कम ही मिल पाती हैं।''[4]

इस संबंध में अपना अभिमत प्रस्तुत करते हुए डॉ. राष्ट्रबंधु कहते हैं कि – ''बाल–पत्रिकाओं का इतिहास क्रमबद्ध रूप से 'हिंदी बाल पत्रिकारिता उद्‌भव और विकास' में जितना सायास लिखा गया है, वैसा इस विषय में अन्यत्र दुर्लभ है। डॉ. सुरेंद्र विक्रम ने बड़े परिश्रम और मनोवेग से इस महत्वपूर्ण कार्य को संपन्न किया है। यह कृति बालसाहित्य और बाल पत्रकारिता की दृष्टि से अत्यंत उपयोगी और उल्लेखनीय है।''[5]

बालसाहित्य के स्वरूप के अंतर्गत बालसाहित्य के प्रमुख तत्वों पर प्रकाश डालने के साथ ही बालसाहित्य में बालकों की स्थिति का भी मूल्यांकन किया गया है। इसके पश्चात् अनेक प्रतिष्ठित विद्वानों द्वारा बालसाहित्य को पारिभाषित करने वाले विचारों को रखकर उनका मूल्यांकन किया गया है। डॉ. विक्रम ने जिन विद्वान बाल–साहित्यकारों की परिभाषाओं को अपनी इस पुस्तक में प्रस्तुत किया है, उनमें निरंकारदेव सेवक, विष्णु प्रभाकर, प्रभाकर माचवे, डॉ. नगेंद्र, डॉ. रामकुमार वर्मा तथा डॉ. हरिकृष्ण देवसरे जैसे नामचीन बाल साहित्यकार हैं।

निरंकारदेव सेवक बालसाहित्य को परिभाषाओं की सीमा के दायरे से बाहर मानते हैं। उनके विचार से – ''निश्चित नियमों से बँधा साहित्य बच्चों की तेज कल्पना और चंचल मन से मेल नहीं खाता, बड़प्पन को त्यागकर बच्चों की सरलता, कौतूहल और जिज्ञासा को धारण करके बालसाहित्य की रचना करने वाला ही बालसाहित्यकार अपने लेखन में सफलता प्राप्त कर सकता है अर्थात् बच्चों के लिए, लिखने के लिए बच्चा बनना आवश्यक है।''[6]

डॉ. श्रीप्रसाद के अनुसार – ''वह समस्त साहित्य, जिसमें बालसाहित्य के तत्त्व हैं अथवा जिसे बालकों ने पसंद किया है, भले ही उसकी रचना मूलतः बालकों के लिए न हुई हो, बालसाहित्य है।''[7]

शिवशंकर मिश्र के अनुसार – ''श्रेष्ठ बालसाहित्य वह है, जिसे पढ़कर बच्चों में सद्‌गुण उभरे तथा उन्हें सद्‌कार्य की प्रेरणा मिले। उनकी आकांक्षाएँ बलवती हों।''[8]

ऐसे ही अनेक मत डॉ. विक्रम ने बालसाहित्य के स्वरूप निर्धारण के लिए प्रस्तुत किए हैं, जिनका निष्कर्ष यह निकलता है कि बालसाहित्य की रचना बालकों के लिए बालक बनकर ही की जा सकती है। दूसरे, बालसाहित्य की विषयवस्तु बालकों के मन को भाने वाली होनी चाहिए। तीसरे, वह भरपूर मनोरंजक होने के साथ ही उतना ही शिक्षाप्रद भी होनी चाहिए।

''स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् बाल–पत्रकारिता के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ। फलतः कई नई बाल–पत्रिकाएँ उभरकर सामने आईं, जिनमें से कुछ तो अभी भी चल रही हैं, परंतु कुछ आर्थिक बोझ तथा अन्य संपादकीय, व्यवस्थापकीय कठिनाइयों के कारण अधिक समय तक न चलकर बीच में ही काल के गाल में समा गईं। परंतु इतना निर्विवाद है कि स्वतंत्रता–प्राप्ति के बाद बाल–पत्रिकाओं का प्रकाशन बड़ी तेजी से प्रारंभ हुआ। अनेक व्यक्तिगत संस्थानों और उत्साही नवयुवकों ने बच्चों की पत्रिकाएँ निकालने में सक्रियता दिखलाई।''[9]

डॉ. विक्रम ने इस अध्याय का प्रारंभ सन् 1948 से भारत सरकार के प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित की जाने वाली चर्चित बाल–पत्रिका 'बालभारती' के विशद वर्णन से किया है तथा विपरीत परिस्थितियों में पत्रिका के बंद करने के सुझाव पर चाचा नेहरू के हस्तक्षेप एवं संरक्षण का उल्लेख करते हुए उनके विचार अंकित किए हैं–''इसमें कोई संदेह नहीं कि जब हम इस तरह की किफायत करने की बात सोचते हैं तो इससे अधिक खराब बात दूसरी नहीं हो सकती। मैं तो किसी और क्षेत्र में किफायत करना पसंद करूँगा। यहाँ तक कि भोजन के मामले में किफायत सोची जा सकती है। मगर बच्चों के मानसिक विकास के लिए भोजन न मिले, ऐसा विचार तो आना ही नहीं चाहिए। 'बालभारती' जैसी बढ़िया और उपयोगी पत्रिका को बंद नहीं किया जाएगा।''[10]

नेहरू के यह विचार मासिक पत्रिका 'मधुमती' सन् 1967 के जुलाई–अगस्त के अंक में प्रकाशित हुए थे। लेखक ने इसे जवाहरलाल नेहरू का आशीर्वाद माना है, क्योंकि उनके द्वारा संरक्षण दिए जाने के बाद से यह पत्रिका लगातार प्रकाशित हो रही है। प्रारंभ में प्रकाशन विभाग के निदेशक इसके संपादक हुआ करते थे, लेकिन इसके बाद 1957 से प्रयाग नारायण त्रिपाठी, सावित्रीदेवी वर्मा, द्रोणवीर कोहली, सूर्यनारायण सक्सेना, प्रेमकांत भार्गव तथा शिवकुमार आदि का उल्लेख मिलता है। फिलहाल केंद्रीय सूचना सेवा का अधिकारी इसके संपादन का दायित्व निभाता है। सन् 1960 के बाद इस पत्रिका की निकलने वाली प्रतियों का आँकड़ा प्रस्तुत कर इसकी महत्ता को सिद्ध करने का प्रयास किया गया है।

डॉ. विक्रम ने विभिन्न आँकड़ों तथा वर्षवार विवरण आदि को प्रस्तुत कर जिस प्रकार बाल–पत्रिकाओं के उतार–चढ़ाव, उनके स्वभाव, विषयवस्तु, उपयोगिता और योगदान आदि का समीक्षात्मक विवरण प्रस्तुत किया है, वह लेखक की तीक्ष्ण दृष्टि और बालसाहित्य पर उसकी पकड़ का परिणाम है। डॉ. विक्रम ने इस विवेचन के दौरान अधिकांशतः असमय ही बाल–पत्रिकाओं की होने वाली मृत्यु पर क्षोभ व्यक्त किया है।

डॉ. वेदप्रताप वैदिक के मत का उल्लेख करते हुए लेखक ने बाल–पत्रिकाओं के अस्तित्व पर चिन्ता व्यक्त करते हुए उनके स्वरूप को बचाए रखने के लिए सात्विक प्रतिस्पर्धा की आवश्यकता बताई है – ''अल्प अवधि में ही कई बाल–पत्रिकाओं का बंद होना बाल–पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रश्नचिहन लगा देता है। अगर यही हाल बाल–पत्रिकाओं का रहा तो इसमें कोई संदेह नहीं कि एक दिन यह प्रश्न बच्चों के अस्तित्व पर भी लगकर रहेगा। कई आयोग जाँच के काम के लिए नियुक्त किए जाते हैं। बच्चों की पत्रिकाओं के बंद हो जाने के कारणों पर भी विचार किया जाना चाहिए, जिससे बाल–पत्रिकाओं की मृत्यु पर विजय पाई जा सके। स्थाई रूप से स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् निकलने वाली मासिक पत्रिकाओं में जैसी प्रतिद्वंद्विता, प्रतिस्पर्धा और प्रतियोगिता की सात्विकता जैसी होनी चाहिए, वह नहीं है।''[11]

डॉ. विक्रम ने इस कालखंड को अपनी विहंगम दृष्टि से देखकर जो निष्कर्ष निकाला है, वह इस कालखंड को बाल–पत्रकारिता का 'स्वर्णयुग' सिद्ध करता है। इस कालखंड की प्रकाशित पत्रिकाओं में 'बालभारती' आज भी बालसाहित्य की श्रीवृद्धि में संलग्न है।

सन् 1964 में 'शेरसखा' नामक बाल पत्रिका का उल्लेख किया गया है, जो बच्चों की प्रसिद्ध पत्रिका रही है। इसके अतिरिक्त राजेंद्र अवस्थी के संपादन में 'नंदन' जैसी पत्रिका का प्रकाशन इसी वर्ष प्रारंभ होने तथा सुरेश बिजलानी के संपादन में पंजाब से 'तरुणयुग' बाल–पत्रिका के प्रकाशित होने का उल्लेख मिलता है।

सन् 1965 में केशव प्रसाद विद्यार्थी के संपादन में मंदसौर (मध्यप्रदेश) से 'कन्या', नई दिल्ली से रत्नप्रकाश शील के संपादन में 'मिलिंद', वीरेंद्रनाथ ग्रोवर के संपादन में बरेली से 'गुलबाल' आनंद कमल के संपादन में इलाहाबाद से 'जंगल', सुरेंद्र कपिल के संपादन में अलीगढ़ से 'अलीगढ़ के शिशु' नामक विभिन्न पत्रिकाओं के प्रारंभ होने का उल्लेख किया गया है। इन बाल–पत्रिकाओं में 'मिलिद' को लेखक ने सर्वाधिक महत्व दिया है।

सन् 1966 में ब्रजेश्वर मलिक के संपादन में पटना से 'चमकते सितारे' तथा सरोजिनी कुलश्रेष्ठ के संपादन में लखनऊ से प्रकाशित 'शिशुबंधु' नामक बाल–पत्रिकाओं के प्रकाशन का प्रारंभ माना गया है।

सन् 1967 में महेंद्र जोशी के संपादन में इंदौर से पहली बार 'बच्चों का अखबार' नामक एक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन किए जाने का उल्लेख किया गया है, जो बच्चों के लिए समाचार और विचार देने वाला अकेला साप्ताहिक था। इसी वर्ष उषा तिवारी के संपादन में लखनऊ से 'बालजगत' मनमेल जैन के संपादन में अजमेर से 'छात्र हितैषी', अशोक कुमार विश्वकर्मा के संपादन में जबलपुर (मध्यप्रदेश) से 'नटखट' नामक मासिक बाल पत्रिकाओं के प्रकाशन का उल्लेख किया गया है।

सन् 1968 में रमेशकुमार 'बालरत्न' के संपादन में लुधियाना से, 'बालकुंज', देवकीनंदन शर्मा के संपादन में दिल्ली से 'पूत–सपूत', दिल्ली से ही विश्वनाथ के संपादन में 'चंपक' तथा लखीमपुर खीरी से अब्दुल कादिर के संपादन में 'बच्चों की पुकार' नामक पत्रिकाओं के प्रकाशन का उल्लेख किया गया है। इनमें से बच्चों की लोकप्रिय पत्रिका 'चंपक' पर लेखक ने विस्तार से प्रकाश डाला है।

सन् 1969 में निकलने वाली बाल–पत्रिका 'लोटपोट' और मुजफ्फरपुर (बिहार) से मुरलीप्रसाद सिंह के संपादन में 'चंद्रखिलौना' का उल्लेख किया गया है। 'लोटपोट' में हास्य–व्यंग्य की इतनी अच्छी रचनाएँ प्रकाशित होती थीं कि माँग के चलते उसे मासिक से साप्ताहिक कर दिया गया था। सन् 1970 में प्रखरबुद्धि कपूर के संपादन में प्रारंभ हुई दिल्ली से प्रकाशित बच्चों की प्रसिद्ध पत्रिका 'मुन्ना' की चर्चा करते हुए लेखक ने महेंद्र प्रताप गर्ग द्वारा संपादित दिल्ली की बाल पत्रिका 'गोलगप्पा' तथा दिल्ली से ही प्रकाशित 'बाल रंगभूमि' का भी उल्लेख किया है, जिसके संपादक सत्येन गुप्ता थे। लेखक ने इन सभी मासिक बाल–पत्रिकाओं का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया है।

सन् 1971 में दिल्ली से नजीर सईद के संपादन में प्रकाशित 'हिंदी कॉमिक्स' नामक मासिक पत्रिका निकलने का उल्लेख है जो अपने नाम के अनुरूप कॉमिक्स रूप में ही प्रकाशित होती थी। दिल्ली से ही इसी के अनुरूप 'महाबली कॉमिक्स' का भी प्रकाशन होने का उल्लेख है। सन् 1972 में घनश्याम रंजन के सम्पादन

में लखनऊ से 'चमाचम' नामक बाल पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ होने का उल्लेख करते हुए इसकी विशेषताओं पर विशेष रूप से प्रकाश डाला गया है।

सन् 1973 में हिंदी और पंजाबी दोनों भाषाओं में साथ–साथ छपने वाली दिल्ली से प्रकाशित 'हँसती दुनिया' का लेखक ने विशेष उल्लेख किया है। इसी वर्ष मद्रास से श्रीमती विजया के संपादन में 'गुड़िया', दिल्ली से शशिप्रभा अग्रवाल के संपादन में 'किशोर मिलिंद', लखनऊ से मुश्ताक परदेशी के संपादन में 'बालबंधु', दिल्ली से 'शक्तिपुत्र' नामक मासिक बाल–पत्रिकाओं का उल्लेख किया गया है। लेखक ने 'गुड़िया', 'किशोर मिलिंद' तथा 'हँसती दुनिया' आदि पत्रिकाओं के प्रकाशन से संबंधित विस्तृत ब्योरा अपनी इस पुस्तक में दिया है।

सन् 1974 में जयपुर से ए.ए. अनंत के संपादन में 'प्यारा बुलबुल', नई दिल्ली से अंजू बजाज और सरोजनी प्रीतम के संयुक्त संपादन में 'शावक' नामक दो बाल–पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारंभ हुआ था, जिनके विषय में लेखक ने विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला है।

सन् 1975 में विश्वदीप के संपादन में नई दिल्ली से 'बालेश', रवींद्र श्रीवास्तव में संपादन में लखनऊ से 'बालरुचि', जालंधर से मनमोहन सहगल के संपादन में 'देवछाया', नरेशचंद्र सक्सेना के संपादन में कानपुर से 'बालदर्शन' आदि बाल–पत्रिकाओं पर क्रमानुसार विस्तार से चर्चा की गई है।

सन् 1977 में कानपुर से करुणेश वर्मा के संपादन में 'शिशुरंग', नई दिल्ली से रमेश कुमार राणा के संपादन में 'कलरव', राम प्रवेश चौबे के संपादन में वाराणसी से 'आदर्श बालसखा', इंदौर से त्रिलोक सिंह खानूजा के संपादन में 'ओ राजा', डॉ. राष्ट्रबंधु के संपादन में कानपुर से 'बालसाहित्य समीक्षा' आदि प्रसिद्ध बाल–पत्रिकाओं का उल्लेख करते हुए लेखक ने इन सभी की वस्तुस्थिति को हमारे समक्ष रखा है। डॉ. राष्ट्रबंधु की 'बालसाहित्य समीक्षा' पत्रिका आज भी लगातार प्रकाशित हो रही है।

सन् 1979 में जालंधर से कु. सीमा के संपादन में 'बालकल्पना', नरेंद्रनाथ चक्रवर्ती के संपादन में कलकत्ता से 'मेला', ग्वालियर से विश्वनाथ मित्तल के संपादन में 'देवपुत्र' आदि पत्रिकाओं के प्रकाशन की चर्चा करते हुए लेखक ने 'मेला' पत्रिका पर अधिक विस्तार से टिप्पणी करते हुए बालसाहित्य में उसके योगदान की सराहना की है।

सन् 1980 में अकोला (चित्तौड़गढ़) से राजकुमार जैन 'राजन' के संपादन में 'रॉकेट', नई दिल्ली से कृष्णकुमार भसीन के संपादन में 'बालमन' तथा कानपुर से नरेंद्रकुमार के संपादन में 'बालरत्न' नामक पत्रिकाओं के प्रकाशन पर चर्चा की गई है। डॉ. विक्रम ने बालसाहित्य के विकास में इन तीनों के योगदान की सराहना करते हुए इन पत्रिकाओं में लिखने वाले प्रमुख रचनाकारों का भी उल्लेख किया है।

सन् 1981 में रतलाम (म.प्र.) से रमेश गुप्ता 'चातक' के संपादन में 'कुरकुट' लोकसंपर्क विभाग, हरियाणा द्वारा पुष्पकुमार सिंह के संपादन में 'नन्हे तारे', कानपुर से श्याम निगम के संपादन में 'नन्ही मुस्कान' जैसी मासिक पत्रिकाओं तथा 'नन्हे–मुन्नों का अखबार' (इलाहाबाद) तथा 'दि चिल्डेन टाइम्स' (लखनऊ) नामक पाक्षिक पत्रों के प्रकाशन का भी उल्लेख किया गया है।

सन् 1982 में अहमदनगर (महाराष्ट्र) से डॉ. दयानंद शर्मा 'मधुर' के संपादन में 'आनंददीप', इलाहाबाद से कुणाल श्रीवास्तव के संपादन में 'बालनगर' नानपारा (बहराइच) से अजीजुल्लाह खाँ के संपादन में 'चंदन', लखनऊ से प्रेमचंद्र गुप्त 'विशाल' के संपादन में 'लल्लू जगधर' आदि पत्रिकाओं की चर्चा की गई है, जिनमें 'बालनगर' तथा 'लल्लू जगधर' पत्रिकाएँ विशेष उल्लेखनीय हैं। इन्होंने बालमन पर अपनी मजबूत पकड़ बनाई थी।

डॉ. विक्रम ने हस्तलिखित बाल–पत्रिकाओं के विषय में सूचना देने वाली 'बालसखा' से विभिन्न सूचनाएँ एकत्रित कर इस अंक में उद्धृत की हैं, जो इस बात का प्रमाण हैं कि उस समय हस्तलिखित बाल पत्र–पत्रिकाओं का आंदोलन कितना जोरों पर था। डॉ. विक्रम ने डॉ. हरिकृष्ण देवसरे के शोध–प्रबंध में तैयार की गई हस्तलिखित बाल पत्र–पत्रिकाओं की सूची भी प्रस्तुत की है। इसी के साथ उन दैनिक व साप्ताहिक समाचार पत्रों की भी एक सूची दी है, जिनमें रविवार के दिन रंगीन व आकर्षक साज–सज्जा के साथ कुछ न कुछ आवश्यक बालोपयोगी सामग्री अवश्य रहती थी।

डॉ. संजीव भानावत का कहना है कि – ''डॉ सुरेंद्र विक्रम की यह कृति उनकी गहन शोधवृत्ति तथा अथक परिश्रम की परिचायक है। निश्चय ही यह पुस्तक पत्रकारिता के अध्येताओं एवं शोधार्थियों के लिए उपयोगी और महत्वपूर्ण है।''[12]

कौशलेंद्र पांडेय पुस्तक को बाल पत्रकारिता पर एक कालजयी कृति मानते हुए लिखते हैं कि – ''डॉ. सुरेंद्र विक्रम ने वर्षों के असीम धैर्य, अनवरत् श्रम एवं शोध के फलस्वरूप 'हिंदी बाल पत्रकारिता : उद्भव और विकास' नामक यह कृति पाठकों के हाथ में दी है। ... इस कृति के बहाने बाल पत्रकारिता के तमाम महारथी तथा उनकी पत्रिकाओं के भी नाम प्रकाश में आए हैं, अन्यथा वह विस्मृत थे।''[13]

कमलेश भट्ट 'कमल' भी पुस्तक को महत्वपूर्ण मानते हुए कहते हैं कि 'यह पुस्तक (हिंदी बाल–पत्रकारिता : उद्भव एवं विकास) हिंदी बालसाहित्य तथा उसके पत्रकारिता के सौ वर्षों के इतिहास को अपेक्षाकृत प्रामाणिक ढंग से प्रस्तुत करने में सफल हुई है, जिसके पीछे लेखक के अथक् श्रम और प्रयास की अनदेखी नहीं की जा सकती।''[14]

निष्कर्ष:

निष्कर्षतः हिन्दी बाल पत्रकारिता के गहन अध्ययन से यह तथ्य स्पष्ट रूप से सामने आता है कि यह केवल बालकों के मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि उनके सर्वांगीण विकास की एक सशक्त रचनात्मक प्रक्रिया है। बाल पत्रकारिता ने बालकों के विचारों, कल्पनाओं और अनुभवों को अभिव्यक्त करने का ऐसा सृजनात्मक मंच प्रदान किया है, जिसके माध्यम से वे समाज, संस्कृति और राष्ट्र के प्रति सजग एवं उत्तरदायी बनते हैं। इस क्षेत्र में कार्यरत पत्र–पत्रिकाओं ने बालक के मानसिक, बौद्धिक, नैतिक और सामाजिक पक्ष को सुदृढ़ करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। समकालीन युग में हिन्दी बाल पत्रकारिता ने बाल साहित्य को नई दिशा दी है। इसने बालकों को केवल पाठक या श्रोता न मानकर उन्हें संवाद के सक्रिय सहभागी के रूप में प्रस्तुत किया है। 'बालसखा', 'नंदन', 'पराग', 'बालभारती', 'चम्पक', 'बालहंस' जैसी पत्रिकाओं ने बाल मनोविज्ञान की गहराई को समझते हुए ऐसी सामग्री प्रस्तुत की, जो मनोरंजन के साथ–साथ शिक्षण, प्रेरणा और चिंतन के तत्वों से भी परिपूर्ण रही। इन पत्रिकाओं ने बालकों में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, जिज्ञासा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा रचनात्मकता के विकास को गति प्रदान की। हिन्दी बाल पत्रकारिता ने बाल साहित्य और समाज दोनों के मध्य सेतु का कार्य किया है। इसने बालकों को न केवल समाज की वास्तविकताओं से अवगत कराया, बल्कि उनमें अपने परिवेश के प्रति संवेदनशीलता और उत्तरदायित्व की भावना भी उत्पन्न की। आज के डिजिटल युग में भी हिन्दी बाल पत्रकारिता अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए है और नई तकनीकी माध्यमों के सहयोग से बाल अभिव्यक्ति के नये आयाम स्थापित कर रही है। इस प्रकार हिन्दी बाल पत्रकारिता भारतीय बाल साहित्य की एक सशक्त धारा है, जिसने न केवल बालकों के व्यक्तित्व और चिंतन को दिशा दी है, बल्कि भावी समाज के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह विधा निरंतर विकसित होते हुए आज भी बाल साहित्य की चेतना, संवेदना और सृजनशीलता का जीवंत प्रतीक बनी हुई है।

संदर्भ –

[1] अवध पुष्पांजलि, दिसम्बर 1993, पृष्ठ 37

[2] यू.एस.एम. पत्रिका, मई–जून 1993, पृष्ठ 84

[3] संतोष पाठक 'संतोषी' – अवध स्काईलाइन साप्ताहिक, 17–23 अप्रैल 1992, पृष्ठ 2

[4] हिन्दी बाल–पत्रकारिता : उद्भव और विकास, पृष्ठ 4

[5] हिन्दी बाल–पत्रकारिता : उद्भव और विकास, आमुख, पृष्ठ 4

[6] शिक्षा (त्रैमासिक पत्रिका), जनवरी 1961, हिन्दी बालगीतों का एक संकलन, पृष्ठ 10

[7] हिन्दी बाल–पत्रकारिता : उद्भव और विकास, पृष्ठ 13

[8] हिन्दी बाल–पत्रकारिता : उद्भव और विकास, पृष्ठ 12

[9] हिन्दी बाल–पत्रकारिता : उद्भव और विकास, पृष्ठ 94

[10] हिन्दी बाल–पत्रकारिता : उद्‌भव और विकास, पृष्ठ 95
[11] हिन्दी बाल–पत्रकारिता : उद्‌भव और विकास, पृष्ठ 115
[12] राजस्थान पत्रिका (रविवासरीय) : 17.09.1992, पृष्ठ 5
[13] स्वतंत्र भारत (उपहार), 01 जुलाई 1992, पृष्ठ 4
[14] दैनिक जागरण (साप्ताहिक परिशिष्ट), 27 जून 1992, पृष्ठ 3